* शिक्षा एक निवेश के रूप में (Education as an Investment) →

जब धन को किसी काम में इस उद्देश्य से लगाया जाता है कि भविष्य में उससे और अधिक धन प्राप्त हो तो उसे निवेश या विनियोग कहते हैं। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति की धनोपार्जन की क्षमता में विकास होता है जिसका प्रयोग वह अपने भावी जीवन में करता है। इस प्रकार से शिक्षा पर किया गया व्यय अर्थ में एक विनियोग है।

मनुष्य की शिक्षा जीवन भर चलती रहती है। शिक्षा का तात्पर्य केवल उस औपचारिक शिक्षा से है जिसका नियोजन राज्य अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करता है। इसमें मुख्य रूप से सामान्य शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा और सतत शिक्षा आती है।

वर्तमान में हमारे देश में 14 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए अनिवार्य सामान्य शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयत्न है। इसके बाद माध्यमिक, विश्वविद्यालयी, प्रोफेशनल एवं तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था है। इस शिक्षा की व्यवस्था में राज्य पूर्ण रूप से व्यय करते हैं। इनके द्वारा किये गये व्यय को शिक्षा पर व्यय माना जाता है।

शिक्षा पर व्यय और उसके प्रतिफल पर शिक्षा अर्थशास्त्रियों ने निम्न तथ्यों की खोज की है।

① शिक्षा पर किये गये व्यय से बालकों की तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। जैसे- एक दूसरे से मिलने के अवसर प्राप्त होना, खेल के लिए अवसर प्राप्त होना आदि। यह शिक्षा व्यय का उपभोगी तत्व कहलाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा पर किये गये व्यय का प्रतिफल मिलता है। इसलिए शिक्षा अपने में विनियोग है।

Scanned with CamScanner

② किसी भी व्यवसाय में अधिक पढ़ा लिखा व्यक्ति कम लिखे-पढ़े व्यक्ति की तुलना में अधिक कुशलता से कार्य करता है और अधिक धनोपार्जन करता है इस प्रकार व्यक्ति की शिक्षा पर जो कुछ भी व्यय होता है उसका उसे प्रतिफल मिलता है, जो व्यय की अपेक्षा अधिक होता है। इसीलिए व्यक्ति की शिक्षा पर किया गया व्यय अपने में विनियोग है।

③ उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति नये विचारों एवं साधनों को ग्रहण करने के लिए तत्पर रहता है। उसमें नये विचारों एवं साधनों को ग्रहण करने की शक्ति भी अपेक्षाकृत अधिक होती है। इस दृष्टि से शिक्षा अपने में विनियोग है।

④ कृषि से सम्बंधित ज्ञान प्राप्त व्यक्ति उस कृषक की अपेक्षा बहुत अधिक उत्पादन करता है। जिसने इस आधुनिक कृषि सम्बंधी ज्ञान को प्राप्त नहीं किया है ठीक इसी प्रकार वाणिज्य की उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति आज के वाणिज्य क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक सफल हो रहा है। इसलिए शिक्षा पर किया गया व्यय अपने में विनियोग है।

⑤ व्यक्ति की शिक्षा पर किए जाने वाले व्यय से व्यक्ति की स्वयं की आय प्रभावित होती है। उद्योगों में साधारण प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति को कम वेतन मिलता है, डिप्लोमा प्राप्त व्यक्तियों को उनसे अधिक और अधिक समय तक धन व्यय कर इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को उनसे अधिक वेतन मिलता है इस प्रकार कह सकते हैं कि शिक्षा पर किया जाने वाला व्यय अपने में विनियोग है।

⑥ शिक्षा पर व्यय करने से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। जो राष्ट्र, प्रोफेशनल, विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा पर जितना अधिक व्यय करता है उसकी राष्ट्रीय आय उतनी ही अधिक होती है। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा पर किये जाने वाला व्यय विनियोग है।

Scanned with CamScanner

* निष्कर्ष → इसका अध्ययन करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिक्षा अपने में विनियोग है परन्तु उस पर किये जाने वाले व्यय का प्रतिफल इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षा आर्थिक शिक्षा की योजना बनाते समय आय के स्रोत और समाज के विभिन्न क्षेत्रों की माँगों कितना ध्यान रखते हैं। यह प्रतिफल इस बात पर भी निर्भर करता है कि शिक्षा पर किये जाने वाले व्यय का कितना सदुपयोग होता है। हमारे यहाँ शिक्षा पर किये जाने वाले व्यय का प्रतिफल अपेक्षा-कृत अन्य देशों से बहुत कम था। पिछले कुछ वर्षों से हम अपनी शिक्षा पर अधिक ध्यान देने लगे हैं और अनिवार्य तथा सामान्य शिक्षा के साथ-2 वाणिज्य, विज्ञान, तकनीकी तथा प्रोफेशनल शिक्षा की व्यवस्था भी करने लगे हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिक्षा पर किया जाने वाला व्यय विनियोग / निवेश है

* शिक्षा का आर्थिक विकास (Economic of Education Development) →

किसी भी देश के आर्थिक विकास से तात्पर्य सामान्यत: उसकी आय की उत्तरोत्तर वृद्धि से लिया जाता है और राष्ट्रीय आय सामान्यत: सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) से मापी जाती है। सकल राष्ट्रीय उत्पाद मशीन आदि की घिसावट घटाने से निरुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद को ही राष्ट्रीय आय मानते हैं। परन्तु आर्थिक विकास के लिए तो आर्थिक विकास किया नहीं जाता; उससे व्यक्तियों के जीवन स्तर में गुणात्मक वृद्धि होनी चाहिए। जीवन स्तर उठने से तात्पर्य केवल रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति से नहीं होता और न ही इसके बाद उच्च स्तर के भोजन, कपड़े और मकान की पूर्ति आदि अन्य संसाधनों के उपलब्ध होने से होता है अपितु इस सबके साथ-2 उपयुक्त शिक्षा, एवं स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध होने, उपयुक्त सुरक्षा सेवा उपलब्ध होने और उपयुक्त यातायात साधन आदि उपलब्ध होने से होती है। इसमें वह सब समाहित होता है जो मानव जीवन के लिए उपयोगी एवं लाभकर हो।

राष्ट्रीय आय बढ़ने के बाद भी राष्ट्र के नागरिकों का जीवन स्तर ऊँचा न उठे अपितु उसमें गिरावट आये। जब राष्ट्र की जनसंख्या में वृद्धि की दर राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर से अधिक होती है। इसलिए अब राष्ट्र के आर्थिक विकास को राष्ट्रीय आय के स्थान पर राष्ट्र की प्रति व्यक्ति आय के रूप में मापा जाता है। राष्ट्रीय आय को राष्ट्र की कुल जनसंख्या से विभाजित करने पर राष्ट्र की प्रति व्यक्ति आय प्राप्त होती है। राष्ट्र की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने के बाद भी राष्ट्र के नागरिकों का जीवन स्तर ऊँचा न उठे। ऐसा तब होता है जब मुद्रा का अवमूल्यन हो जाता है और महंगाई बढ़ जाती है। अत: यह भी आवश्यक है कि प्रति व्यक्ति आय के साथ-2 मुद्रा के तात्कालिक मूल्य को भी ध्यान में रखा जाय।

परिभाषा → "किसी देश के आर्थिक विकास से तात्पर्य उस देश की प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर होने वाली वृद्धि एवं परिणामस्वरूप उसके नागरिकों के जीवन स्तर के ऊँचा ~~उठने~~ उठने से होता है।"

Scanned with CamScanner